“जोधपुर जिले के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिरुचि एवं संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन”

[1]सीमा दैय्या [2]डॉ. सुरभि शर्मा

[1]Research Scholar, [2]Assistant Professor
[1]Department of Arts, Education & Social Science,
[1]JNVU, Jodhpur, India

शोध सारांश–

प्रस्तुत शोध में जोधपुर जिले के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के अन्तर्गत बी०एड० –दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिरुचि तथा संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के लिए जोधपुर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 60 प्रशिक्षणार्थियो का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध में तथ्यों के संकलन हेतु प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिरूचि की जाँच करने के लिए आर. पी. सिंह तथा एस.एन. शर्मा द्वारा निर्मित प्रमापीकृत परीक्षण और संवेगात्मक परिपक्वता की जांच करने के लिए डॉ. यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव द्वारा निर्मित प्रमापीकृत मापनी का उपयोग किया गया । निष्कर्ष में जोधपुर जिले के बी०एड० दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण अभिरूचि में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ तथा इनकी संवेगात्मक परिपक्वता में असार्थक अन्तर प्राप्त हुआ।

संकेताक्षर–

जोधपुर जिला, शिक्षक प्रशिक्षणार्थी, बी०एड० दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थी, शिक्षण अभिरुचि, संवेगात्मक परिपक्वता

प्रस्तावना–

शिक्षा जीवन का सम्पूर्ण शास्त्र है। वस्तुतः किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता अधिकांशतः शिक्षकों की गुणात्मकता पर ही निर्भर करती है। अतः किसी भी देश में शिक्षक शिक्षा की वरीयता क्रम में उच्च स्थान देना उपयुक्त माना जाना चाहिए। किसी भी देश की शिक्षा का स्तर बहुत कुछ उस देश के शिक्षकों की कार्यकुशलता, अभिरुचि, योग्यता, उनकी संवेगात्मक परिपक्वता एवं दृष्टिकोण पर निर्भर करता है, अच्छे सुयोग्य शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया को उचित दिशा प्रदान करते है। अतः सुयोग्य शिक्षकों की प्राप्ति हेतु प्रशिक्षणार्थियों में उचित कौशलों का विकास शिक्षण अभिरूचि तथा संवेगात्मक परिपक्वता का श्रेष्ठ होना महत्वपूर्ण होता है। शिक्षण कौशलात्मक प्रक्रिया है। शिक्षक अभिरुचि शिक्षक के पूर्व अनुभव, धारणा, सामाजिक पक्षों के अनुरूप विकसित होती है। प्रायः प्रशिक्षणार्थी जिन लक्ष्यों की लेकर शिक्षक बनना चाहता है, वह वातावरणजन्य फर्क स्वयं की अभिरुचि निर्मित करने में सहायता करता है। शिक्षक की शिक्षण अभिरुचि तथा संवेगात्मक परिपक्वता उसके व्यक्तिगत गुणों तथा सामाजिक सम्बन्धों दोनों से ही प्रभावित है। शिक्षा तथा शिक्षण के लक्ष्यों की पूर्ति हेतु प्रशिक्षणार्थी में धनात्मक शिक्षक अभिरुचि का होना आवश्यक होता है।

समस्या का औचित्य–

शिक्षक प्रशिक्षण का प्रमुख कार्य कुशल एवं प्रभावी शिक्षकों को तैयार करना है, प्रभावी अध्यापक वह माना जाता है, जो सामाजिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षार्थियों की प्रमुख आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक होता है। एक प्रभावी प्रशिक्षणार्थी को दी जाने वाली विषयवस्तु को छात्रो की रूचि एवं आवश्यकतओं के अनुरूप ढाल लेता है। वह शिक्षार्थी एवं ज्ञान दोनों को अपना केन्द्र बिन्दु मानता है। वह केवल पढ़ाता ही नहीं वरन् स्वयं भी पढ़ता व सीखता है। शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में बी०एड०–दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिरुचि तथा संवेगात्मक परिपक्वता में समानता या भिन्नता का स्तर किस प्रकार है। क्योंकि शिक्षक अभिरुचि तथा संवेगात्मक परिपक्वता का स्तर प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न–भिन्न होता है जो उसके सीखने की तथा सिखाने की क्षमता को प्रभावित करती है।

प्रस्तुत शोध हेतु चयनित चरों से संबंधित साहित्य का अध्ययन करने से ज्ञात हुआ कि बी०एड० –दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिरुचि एवं संवेगात्मक परिपक्वता के सम्बन्ध में व्यापक शोध अध्ययन नही हुए। अंतः इस दृष्टि से शोध कार्य का औचित्य दृष्टिगत होता है। और चरों की शिक्षा के क्षेत्र में महता को देखते हुए इस क्षेत्र में भी शोध का औचित्य स्पष्टता दृष्टि गोचर होता है।

समस्या कथन–

प्रस्तुत शोध हेतु निर्धारित समस्या कथन इस प्रकार है –

“जोधपुर जिले के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिरुचि तथा संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन’’

अध्ययन के उद्देश्य–

(1) बी०एड० दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिरुचि का अध्ययन करना।
(2) बी०एड० दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
(3) बी०एड० दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।
(4) बी०एड० दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत शोध के लिए निम्न परिकल्पनाएँ निर्माणित की गई है–
(1) बी०एड० दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
(2) बी०एड० दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध परिसीमन–

प्रस्तुत शोध हेतु परिसीमन इस प्रकार किया गया है –
(1) प्रस्तुत शोध के लिए जोधपुर जिले के बी०एड० दो वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के 30 प्रशिक्षणार्थियो का चयन किया गया है।
(2) प्रस्तुत शोध के लिए जोधपुर जिले के बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के 30 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध में जोधपुर जिले के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी बी०एड० दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के 60 प्रशिक्षणार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है ।
न्यादर्श चयन हेतु महाविद्यालयों तथा प्रशिक्षणार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। चयनित न्यादर्श का संख्यात्मक स्वरूप निम्न प्रकार से रखा गया है–

सारणी संख्या– 1

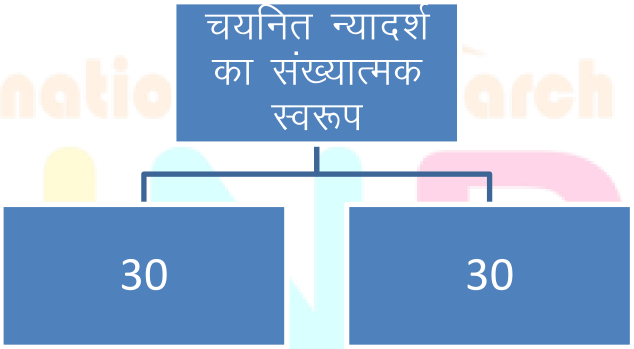

कुल शिक्षक प्रशिक्षणार्थी = 60

शोध विधि–

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

शोध उपकरण–

प्रस्तुत शोध कार्य में दत्त संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का उपयोग किया गया है–
(1) शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षक अभिरुचि की जाँच करने के लिए आर.पी. सिंह तथा एस.एन. शर्मा द्वारा निर्मित परीक्षण मापनी का उपयोग किया गया है।
(2) शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता की जाँच करने के लिए डॉ. यशवीर सिंह तथा डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता परीक्षण मापनी का उपयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी–

शोधकार्य में दत्त संकलन मात्र से शोध कार्य का महत्व नहीं होता है, जब तक कि यह दत्त संकलन का विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों द्वारा न किया जाये। अतः प्रस्तुत शोध में दत्त विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं परीक्षण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है–

(1) मध्यमान
(2) प्रमाप विचलन
(3) टी–परीक्षण

तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

(1) बी०एड० दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण अभिरुचि के मध्यमान का विश्लेषण एवं निर्वचन–

चार्ट संख्या– 1 बी०एड० दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण अभिरुचि के मध्यमान का विश्लेषण

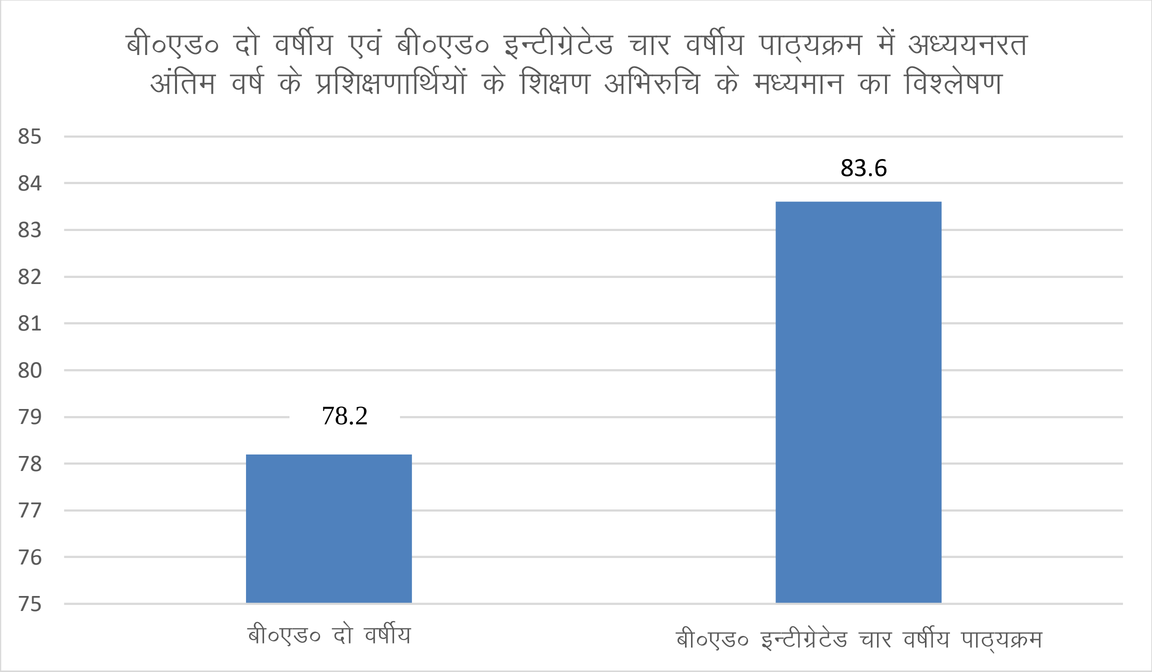

सारणी संख्या– 1 बी०एड० दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण अभिरुचि के मध्यमान का विश्लेषण

क्रम संख्या	प्रशिक्षणार्थी	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मान	परिणाम
1	बी०एड० दो वर्षीय अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थी	78.2	9.40	2.608	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक
2	बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थी	83.6	6.40		

उपरोक्त चार्ट एवं सारणी के अनुसार बी०एड० दो वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियो के शिक्षण अभिरुचि का मध्यमान 78.2 व प्रमाप विचलन 9.40 है तथा बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण अभिरुचि का मध्यमान 83.6 व प्रमाप विचलन 6.40 है। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने पर टी–मान 2.608 है जो 0.05 विश्वासस्तर के मूल्य 1.96 से अधिक है, जो कि मध्यमानों की अन्तर की सार्थकता को अभिव्यक्त करता है। अतः परिकल्पना–1 अस्वीकृत की जाती है।

(2) बी०एड० दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता के मध्यमान का विश्लेषण एवं निर्वचन–

चार्ट संख्या– 2 बी०एड० दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता के मध्यमान का विश्लेषण

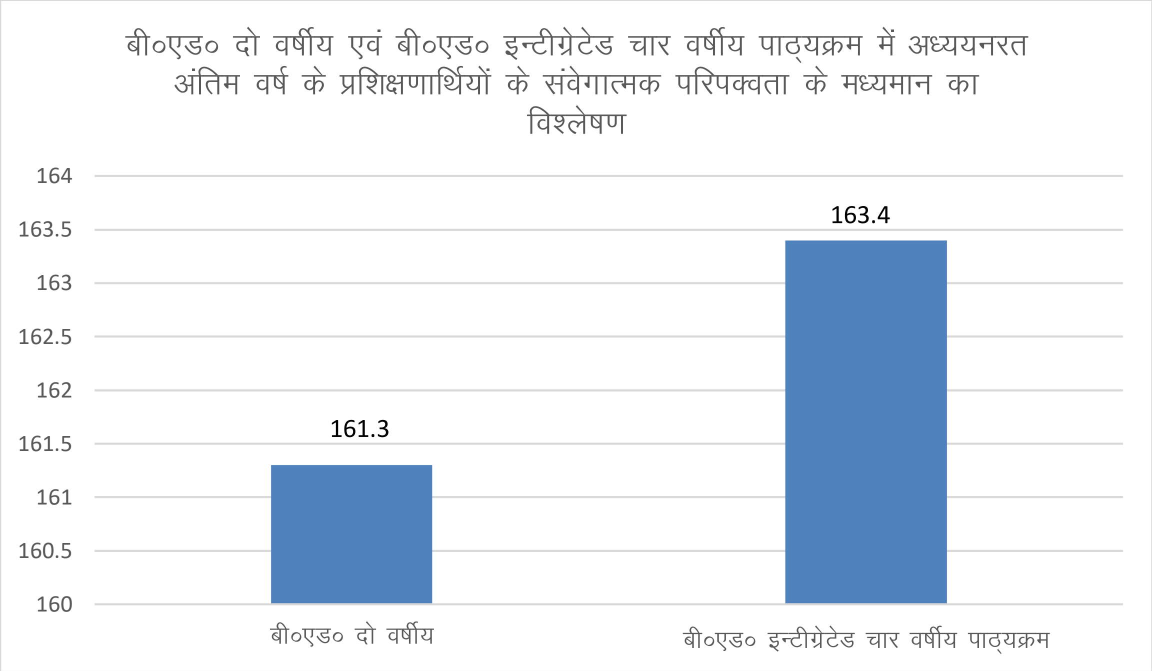

सारणी संख्या– 2 बी०एड० दो वर्षीय एवं बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता के मध्यमान का विश्लेषण

<table>
<tr><th>क्रम संख्या</th><th>प्रशिक्षणार्थी</th><th>मध्यमान</th><th>प्रमाप विचलन</th><th>टी मान</th><th>परिणाम</th></tr>
<tr><td>1</td><td>बी०एड० दो वर्षीय अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थी</td><td>161.3</td><td>8.20</td><td rowspan="2">0.985</td><td rowspan="2">0.05 विश्वास स्तर पर असार्थक</td></tr>
<tr><td>2</td><td>बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थी</td><td>163.4</td><td>8.35</td></tr>
</table>

उपरोक्त चार्ट एवं सारणी के अनुसार बी०एड० दो वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियो के संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान 161.3 व प्रमाप विचलन 8.20 है तथा बी०एड० इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान 163.4 व प्रमाप विचलन 8.35 है। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने पर टी–मान 0.985 है जो 0.05 विश्वासस्तर के मूल्य 1.96 से कम है, जो कि मध्यमानों की अन्तर की असार्थकता को अभिव्यक्त करता है। अतः परिकल्पना–2 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पनाओं से सम्बन्धित निष्कर्ष–

(1) बी.एड. दो वर्षीय एवं बी.एड. इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिरुचि में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः परिकल्पना– 1 अस्वीकृत की जाती है।

(2) बी.एड. दो वर्षीय एवं बी.एड. इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नही पाया गया। अतः परिकल्पना– 2 स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव–

सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिणाम से स्पष्ट है कि जोधपुर जिले के बी.एड. दो वर्षीय एवं बी.एड. इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण अभिरुचि में सार्थक अन्तर होता है तथा संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नही पाया गया। इनके मध्यमानों के अध्ययन के आधार पर बी.एड. दो वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा बी.एड. इन्टीग्रेटेड चार वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों का शिक्षण अभिरुचि का स्तर अधिक अच्छा पाया गया तथा इनकी संवेगात्मक परिपक्वता का स्तर भी अधिक पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

(1) अनिता, राठौड़ उषा (2024) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि का अध्ययन International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), Volume 12, 1 January 2024 | ISSN: 2320-2882, www.ijcrt.org

(2) Kanaparthy, John (2018) Teaching Aptitude of prospective Teaches, International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT) Volume 6, Issue 1 March 2018 | ISSN: 2320-2882, www.ijcrt.org

(3) Sunilima, S. Arun Kumar (2018) A study of Emotional Maturity in undergraduate students of working and non-working mothers, A Peer Reviewed International Journal of Humanities & Social Science Volume-VII, Issue-1, July 2018, Page No- 278-286, www.thecho.in

(4) शर्मा नंदन, देवकी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयो के छात्राध्यापको की संवेगात्मक परिचववता का अध्ययन (2017) International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT) Volume 5, Issue 1 feb 2017 | ISSN: 2320-2882, www.ijcrt.org

(5) राजकुमार (2016) तकनीकी शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिरुचि का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा तथा समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन, शोध प्रबंध

(6) सिंह, डी कौर एस. दुरीजा, जी (2012) इमोशनल मैच्युरिटी डिफरेन्सियल अमंग यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट, जनरल ऑफ फिजिकल एजुकेशन एण्ड स्पोर्टस मैनेजमेन्ट वाल्यूम–3 पृष्ठ सं–41–45

(7) सरीन एवं सरीन (2008) शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, विनोद पुस्तक मन्दिर

(8) Bansi bihares. P, and surwade, L., (2006), "Effect of emotional maturity on the Effectiveness of teacher." Edutracks, Neel Kanal Publication private limited Hyderabad, Vol 6, No-1, PP 37-38

(9) पाण्डेय, डॉ. के. पी. शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2006

(10) भटनागर ए. बी. भटनागर मिनाक्षी अनुराग, (2003) एजुकेशनल साइकोलोजी आर. लाल बुक डिपो., जनवरी

(11) तिवारी जी. एन. (2001) प्राथमिक शिक्षण शिक्षको की अभिरुचि का अवलोकनात्मक अध्ययन। भारतीय आधुनिक शिक्षा

(12) बेस्ट, जे डब्लू, एवं खान, जे.वी. (1996); रिसर्च इन एज्यूकेशन, प्रेंटिस हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

(13) गैरेट, हेनरी ई. (1978); शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, कल्याण पब्लिशर्स, नई दिल्ली

(14) तिवारी, डॉ. गोविन्द शैक्षिक एवं मनौवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

(15) सुखिया, एस. पी तथा मल्होत्रा वी. पी. शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा

(16) तिवारी, डॉ. गोविन्द, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा